ओम् शान्ति 09-10-26 मधुबन

आदरणीय बृजमोहन भाई जी की प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर प्यारे बापदादा को भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश (मोहिनी दीदी)

आप सभी की प्यार भरी याद लेते हुए जब वतन में पहुंची, तो वतन का बहुत सुन्दर दृश्य था। बाबा के राइट साइड में बृजमोहन भाई एक सुन्दर आर्च की सजावट के बीच में वरदानी हाथ करके खड़े थे। जब बाबा की दृष्टि मेरी तरफ आई तो बहुत प्रेम भरी दृष्टि की लेन-देन हुई। मैंने कहा बाबा आपके लिए, बृजमोहन भाई और सभी पूर्वज आत्माओं के लिए याद और भोग लेकर आई हूँ।

तो बाबा ने एक सुन्दर दृश्य दिखाया, जिसमें बृजमोहन भाई का छोटा सा राजकुमार स्वरूप दो क्राउन में दिखाई दे रहा था। एक ताज जो हिज होलीनेस अर्थात् पवित्रता का और दूसरा हाईनेस अर्थात् राजाई का। बाबा ने कहा इस बच्चे ने धर्मनेता और राजनेता दोनों की सेवा बहुत प्यार से की है। धर्म और राजनीति के अनेक सम्मेलन किये, मेल मिलाप किया है। श्रीमत प्रमाण धारणामूर्त बन गुणों और शक्तियों का प्रयोग किया है। बच्चे के अन्दर हमेशा यज्ञ की सेवा के विस्तार की प्लैनिंग चलती रहती थी, एडमिनिस्ट्रेशन में भी निपुण थे।

बाबा ने रतनमोहिनी दादी के समय भी एक दृश्य दिखाया था कि कैसे उनका जन्म एक प्रसिद्ध माननीय राजघराने में राजकुमार-राजकुमारी के रूप में हुआ है। ऐसे आज देखने में आया कि दोनों क्राउन बृजमोहन भाई में भी दिखाई दिये। मैंने कहा बाबा यह तो बहुत सुन्दर और बहुत स्पष्ट दृश्य आपने दिखाया।

बाबा ने कहा बच्चे के जीवन में बहुत अच्छा सन्तुलन था, जितनी आध्यात्मिकता उतनी व्यवहारिकता। जितनी ही उनमें रमणीकता थी, उतनी ही गम्भीरता थी। अगर कहीं सामना करना पड़ता था या समाना होता था, तो दोनों शक्तियों में बैलेन्स से चलते थे। बाबा जो कहते हैं गीता के भगवान को सिद्ध करो, तो बच्चे ने बाबा की आज्ञा प्रमाण बहुत अच्छा प्रयास अन्त तक किया। ऐसे बाबा उनकी अनेक विशेषताओं के बारे में बता रहे थे। मैंने कहा बाबा हमारे सब बड़े भाईयों को आप बुला रहे हैं, हमें यज्ञ में इनकी कमी लगती है। तो बाबा ने कहा आगे तो बढ़ना ही है। संगम भी आगे बढ़कर सतयुग होना है। तो सतयुग में, राजधानी में भी इस तरह की आत्माओं की आवश्यकता है।

फिर मैंने कहा बाबा भोग लाये हैं, भाई-साहब तो हरेक को बहुत प्रेम से भोजन कराते थे। मैंने बाबा को भोग स्वीकार कराया फिर बाबा ने भाईसाहब के साथ सभी मुख्य भाईयों, दादियों-दीदियों को भी भोग स्वीकार कराया। यहाँ के मुख्य भाई और दीदियां का भी बाबा ने आह्वान किया और उन सबको भी भोग स्वीकार कराया। बाबा ने कहा हर बच्चा भविष्य के बारे में सोचता है लेकिन वर्तमान के आधार पर ही भविष्य बनता है। तो ना केवल एक दिन पर आपका एक-एक पल अब सतोप्रधान स्वर्ग की स्थिति में रहना चाहिए क्योंकि अभी स्वर्ग आया कि आया। तो सभी इस बात पर अटेन्शन दें कि चाहे मेरे संकल्प हैं, मेरा स्वभाव है, कोई भी संस्कार हैं, वो सब सतोगुणी हो। ऐसा अनुभव हो कि स्वर्गीय संस्कार, स्वर्गीय सुख, स्वर्गीय प्राप्तियां वर्तमान समय जीवन में अनुभव हो रही हैं। जब अब इस तरह के स्वरूप में होंगे तो बाबा की प्रत्यक्षता होने में देर नहीं लगेगी। बाबा एक-एक बच्चे को अब डबल ताजधारी के रूप में देखना चाहते हैं। बहुत अच्छा सन्तुलन हो। जो बाबा ने लक्ष्य दिया है उसमें भी सम्पन्न रूप में होना चाहिए। बाबा ने भाई-साहब को देखकर कहा कि तुम बच्चों के लिए, परिवार के लिए क्या मैसेज देना चाहते हो! तो भाई-साहब मुस्कराते हुए कहते हैं कि बाबा आपने तो कहा ही है। सभी एक मत पर तो चल ही रहे हैं लेकिन इस समय रुहानी प्रेम और एकता से सब कार्य सम्पन्न करने हैं। तो भाई-साहब ने सभी के प्रति अपना यह संकल्प दिया। फिर बाबा सभी को प्रेम भरी दृष्टि देते रहे और मैं वतन से वापस यहाँ पर आ गई। ओम् शान्ति।